शनि की साढ़ेसती

जन्म कुण्डली में जन्म राशि से बारहवीं राशि में गोचरस्थ शनि का प्रवेश साढ़े साती का आरंभ कहलाता है। साढ़े साती के तीन चरण है। गोचरस्थ शनि का जन्म राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश पहला चरण, जन्म राशि में प्रवेश दूसरा चरण तथा जन्म राशि से द्वितीय राशि में प्रवेश तीसरा चरण होता है। चूंकि गोचरस्थ शनि प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष तक रहता है। इसलिए इसे साढ़े साती कहते हैं। साढ़े सात वर्ष कभी भी केवल अशुभ ही नहीं होते शनि जिस राशि में हो उसके अधिपति की शनि से मित्रता, शत्रुता अथवा समता पर शनि की शुभता अथवा अशुभता निर्भर करती है। जन्म कुण्डली में शनि जिस भाव का अधिपति होगा शनि की शुभता अथवा अशुभता उसी के अनुरूप होगी।

शनि–साढ़ेसती की तिथि तालिका

पहला चक्र
पहला चरण 06/06/2000 – 23/07/2002
दूसरा चरण 23/07/2002 – 05/09/2004
तीसरा चरण 05/09/2004 – 01/11/2006

दूसरा चक्र
पहला चरण 08/08/2029 – 30/05/2032
दूसरा चरण 30/05/2032 – 12/07/2034
तीसरा चरण 08/07/2034 – 27/08/2036

तीसरा चक्र
पहला चरण 22/03/2055 – 20/05/2057
दूसरा चरण 12/07/2059 – 01/09/2061
तीसरा चरण 01/09/2061 – 28/06/2064

मिथन राशि वालों के लिए गोचरस्थ शनि का वृषभ राशि में प्रवेश साढ़े साती का प्रथम चरण आरंभ होगा तथा कर्क राशि तक शनि के भ्रमण तक साढ़े साती रहेगी। मिथुन राशि की कुण्डली में शनि अष्टमेश तथा भाग्येश है। प्रथम ढाई वर्ष शनि अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि में रहता है। पर अपनी राशि से केन्द्र व त्रिकोण में सम्बन्ध बनाता है। वृषभ राशि में

स्थित होने पर शनि की दृष्टि द्वितीय षष्ठ व भाग्य भाव पर पड़ती है। द्वितीय तथा षष्ठ भाव शनि के शत्रु भाव हैं। परंतु भाग्य भाव उसका अपना भाव है। ऐसी स्थिति में जातक असभ्य भाषी कठोर चिड़चिड़े स्वभाव वाला बन जाता है। कार्य क्षेत्र में बाधाएँ आती हैं तथा योजनाएँ असफल होती हैं। धनाभाव भी कार्य क्षेत्र में पिछड़ने का कारण बनता है। मित्र वर्ग से धोखा मिलता है। ऐसे समय में जातक अपने बच्चों का व्यवस्थित रूप से पालन पोषण नहीं कर पाता तथा संतान को कष्ट रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में असफलता मिलती है। जातक नए व्यसनों में पड़ कर तथा व्यर्थ घूम कर समय नष्ट करता है। खाने–पीने में अनियमितता के कारण गले का कोई रोग हो सकता है। पेट के रोग, अपचन, अजीर्ण तथा वायु रोग से जातक पीड़ित रहता है। उच्च अधिकारियों से अनबन रहती है जिसके कारण जातक बदला लेने की ताक में रहता है। ऐसे समय जातक को अवनति अथवा स्थानांतरण का सामना करना पड़ सकता है। शनि की द्वितीय भाव पर दृष्टि पड़ने से कुटुम्ब स्थान को प्रभावित करती है जिसके कारण परिवार से अनबन रह सकती है अथवा परिवार के कारण जातक मानसिक व शारीरिक रूप से व्यथित रहता है। धर्म, आस्तिकता तथा पूजा पाठ इत्यादि से जातक सम्बन्ध नहीं रखता। ऐसी स्थिति में दया, प्रेम, ममता, परोपकार आदि की भावनाओं में कमी आ जाती है। यह समय मातृ–कुल के लिए थोड़ी परेशानी का कारण भी बन सकता है। धन कमाने के लिए जातक को घर से दूर जाना पड़ सकता है। जातक किसी में विश्वास नहीं करता। व्यापार में साझेदार धोखा दे सकते हैं। धन का आभाव रहता है। स्त्री को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ रह सकती हैं। संतान को कष्ट रहता है विशेषकर कन्या संतति को। शनि के नवमेश होने से संभवतया विदेश जाना पड़ सकता है।

ढाई वर्ष पश्चात् शनि मिथुन राशि में प्रवेश करता है जो बुध की राशि है। यहाँ से साढ़े साती का द्वितीय चरण आरंभ होता है। इस समय शनि की सुख भाव, आयु भाव तथा लाभ भाव पर दृष्टि पड़ती है। भाग्य स्थान से शनि का षडाष्टक योग बनता है जिसके फलस्वरूप जातक अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास करता है। परंतु जिसमें वह पूर्णतः सफल नहीं हो पाता। जातक सुख पाने के लिए भटकता रहता है। परंतु रोग व कष्ट से मुक्ति नहीं मिलती। शनि की लगन में स्थिति धन व परिवार दोनो के लिए हानिकारक होती है। मित्रों से धोखा मिलता है। जातक की रुचि कुकर्मों में बढ़ जाती है तथा कई बार निम्नस्तरीय लोगों से जातक के संपर्क बन जाते हैं। दुर्घटना की सम्भावना अधिक रहती है। गिरने से चोट भी लग सकती है यदि विद्यार्थी जीवन हो तो इस समय असफलता ही हाथ लगती है। इस समय जातक अपने पराए या भले बुरे का भेद करने में असमर्थ होता है। शनि की यह स्थिति

जातक की बुद्धि भ्रमित कर देती है। शनि की तृतीय दृष्टि भ्राता स्थान को प्रभावित करती है। मित्र राशि में स्थित होने पर भी भाई बहनों से विवाद का भय बना रहता है जातक का भाई बंधुओं से शत्रुता पूर्ण आचरण रहता है। इस काल में पुत्र प्राप्ति भी हो सकती है। यदि दशा–अन्तर्दशा का योग भी हो जाए तो जातक के संपर्क में दुष्ट व मूर्ख लोग ही रहते हैं। किसी विशेष विषय में जातक दक्षता प्राप्त कर सकता है। अंधेरे के कार्यों व पदार्थों से जातक को लाभ हो सकता है। ज्येष्ठ संतान से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। जातक को अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए। अन्यथा उच्चाधिकारियों से विरोध बढ़ सकता है। यात्राओं से हानि हो सकती है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि पड़ने के परिणाम स्वरूप विवाह में विलम्ब हो सकता है। पति पत्नी में लड़ाई अथवा बिछोह हो सकता है। साझेदारी के व्यापार में हानि अथवा धोखा हो सकता है। इस समय साझेदारी का काम आरंभ न करें,। माता पिता से विरोध हो सकता है। जातक व्यापक स्तर पर किए गए कार्य में सफल नहीं हो सकता। जातक अपने भाग्य के विषय में चिन्तित रहता है। यदि स्त्री जातक हो तो गर्भपात हो सकता है। जातक किसी न किसी रोग से पीड़ित रह सकता है। इस समय पिता को कष्ट व मातृ–सुख में कमी आ जाती है। सरकारी कामों में तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने में अड़चन आ सकती है। ढाई वर्ष के पश्चात् जातक खोया हुआ धन, बुद्धि, संतान, स्वयं का सुख प्राप्त करने में सफल होता है परंतु आचरण में कटुता लगी ही रहती है। जातक विदेश में धन कमा सकता है तथा सम्मानित भी होता है। उसे वाहन चलाते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए। शिक्षा के विषय में इस समय असफलता ही हाथ लगती है। जातक के बने बनाए काम बिगड़ जाते हैं। ऐसे समय निम्न वर्ग के लोग जैसे नौकर इत्यादि साथ देते हैं। परंतु जातक अपने स्वभाव के कारण उनका सहयोग भी नहीं ले पाता है।

तत्पश्चात शनि के अंतिम चरण में कर्क राशि में प्रवेश करते ही साढ़े साती का तीसरा चरण आरंभ हो जाता है। तीसरे चरण में शनि अपने शत्रु चंद्रमा की राशि कर्क में है। यह स्थिति कुटुम्ब स्थान को प्रभावित करती है। धन का संग्रह नहीं हो पाता। व्यापार के क्षेत्र में उतार–चढ़ाव का समय होता है। छोटे भाई बहनों को कष्ट बना रहता है। कई बार भाइयों में आपस में कलह रहती है। वाणी पर कठोरता आ जाती है। गले से सम्बन्धित कोई रोग भी हो सकता है। शनि की तीसरी दृष्टि मातृ भाव को प्रभावित करती है। इसलिए मातृ–सुखों में कमी अथवा घर में क्लेश हो सकता है। किन्तु जातक शीघ्रगामी हो जाता है। समाज तथा मित्रों से सम्मान प्राप्ति भी होती है शत्रु पराजित होने लगते हैं। किन्तु जातक की कटु वाणी होने के कारण शत्रु अधिक बन जाते हैं। जातक बुद्धिमान व पवित्र होता चला जाता है।

नौकर इत्यादि बढ़ जाते हैं तथा वाहन प्राप्ति भी हो सकती है। स्त्री जातकों को गर्भपात अथवा गर्भाशय सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। माता तथा संतान को कष्ट होता है। अपव्यय लगा रहता है। शत्रुओं पर विजय होती है। अचानक धन प्राप्ति हो सकती है। चोरी गया अथवा खोया हुआ या किसी को दिया हुआ धन वापिस मिल सकता है परंतु थोड़ा थोड़ा करके ऐसे समय में लोहे के कार्य, अंधेरे के कार्य, तेल, धन आदि शनि की वस्तुओं के लेन देन से फायदा हो सकता है। शनि की साढ़े साती के लिए निम्नलिखित उपाय करें, अथवा किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श लें।

साढ़े साती का सम्पूर्ण समय एक जैसा नहीं होता तथा शुभ व अशुभ परिणाम इस बात पर निर्भर करते हैं कि गोचर में शनि किन नक्षत्रों में भ्रमण कर रहा है। साढ़े साती में अनिष्ट फलों को कम करने के उपाय मंत्र जाप, पूजा, सेवा तथा दान पर आधारित है। दोष शांति का उपाय जानने के लिए जन्म कुण्डली की सम्पूर्ण विवेचना आवश्यक है। फिर भी साढ़े साती के अरिष्ट फलों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं। ये उपाय यदि साढ़े साती के आरंभ होने से पहले ही कर लें तो विशेष लाभ की सम्भावना होती है।

1 प्रत्येक शनिवार को शनि देवता के मंदिर में जाकर पूजा करें, व तेल चढ़ाए।
2 शनि ग्रह का मंत्र जाप करें,। संध्या के समय 108 बार इस मंत्र का जाप करें, – " ऊँ सः शनैश्चराय नमः " या " ऊँ शं शनैश्चराय नमः " ।
3 शनिवार को वृत रखें। शुक्ल पक्ष में वृत का आरंभ करें, तथा कम से कम 40 शनिवार तक वृत रखें।
4 सरसों के तेल का दीपक प्रत्येक शनिवार पीपल के पेड़ के नीचे रखें ।
5 लोहा, काला सुरमा, सरसों का तेल, चमड़े के जूते, काला कपड़ा, शराब, काली उड़द की दाल आदि का शनिवार को दान करें,।
6 काले घोड़े की नाल या नाव की कील का छल्ला धारण करें, अथवा नीलम धारण करें,।
7 निम्न वर्ग के व्यक्तियों की सेवा करें, या उन्हे दान दें।
8 शराब व मांस का सेवन न करें,।
9 शनिवार को काला सुरमा जमीन में दबा दें।
10 नारियल अथवा बादाम शनिवार के दिन नदी में बहाएं।
11 रात्रि में दूध न पीएं।

यद्यपि ये उपाय बता दिए गए हैं किन्तु इन्हें अपने आप आरंभ नहीं करना चाहिए। किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श लेकर ही उपाय करने की विधि तथा उचित समय की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यदि साढ़े साती के अरिष्ट फलों की शांति के लिए उचित रीति से उपाय किए जाए तो साढ़े साती के परिणाम उतने भयाकारी नहीं होंगे जितना कि उनसे भयभीत किया जाता है।